तीसरी हथेली
राजी सेठ

तीसरी हथेली

राजी सेठ

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: मार्च, 2022

© राजी सेठ

ISBN: 978-81-951158-9

यह कहानी संग्रह 1981 में राजकमल प्रकाशन से प्रकाशित हुआ था। इसको ईबुक के रूप में पुनर्प्रकाशित किया गया है।

अपने अ-लेखक पति को

जो निष्ठा में मुझसे ज़्यादा लेखक हैं

आप से...

पाँच वर्ष की लेखकीय यात्रा का दूसरा पड़ाव- दूसरा संग्रह। इसे आपको देते अधिक गहरी आश्वस्ति हो सकनी चाहिए थी मन में, इससे गहरा विश्वास, परंतु ऐसा नहीं है, और यह अनाश्वस्ति निजी भी नहीं है, न ही किसी आत्मसजग लिप्तता का परिणाम। यह है उसी मानसिक एहसास का विस्तार जो सोचने के लिए बाध्य करता है कि कुछ भी नहीं है- अंतिम, अविकल्प चरम। हर मुद्रा, हर समाधान, हर उत्तर है- एक यत्न, एक प्रयास। उधेड़ने का। बंदर के हाथ में पड़ गए कपड़े के रुई-भरे खिलौने को उधेड़-उधेड़कर सीवनें खोल-खोलकर देखने का। वह उधड़ी हुई सीवनें फिर चाहे भीतर का कैसा भी दृश्य प्रस्तुत करें। सारे सत्व को सामने उधाड़कर रखें, या रेशा-रेशा नोचकर उलटे एक सम्भ्रम की स्थिति पैदा करें। तिस पर भी निर्णय रचनाकार के हाथ में नहीं, पाठक के हाथ में होगा और वही अंतिम भी होगा।

यह बात इतनी तीखी या पैनी होकर सामने न आती यदि इस बीच (संग्रह की तैयारी के दौरान) अपनी ही रचनाओं के प्रति विसर्जन- भाव, वैसी बाहरी दृष्टि उपलब्ध न हुई होती। उस अनिजी भाव से किन्ही कहानियों में से गुजरते लगा- वैसी ही स्थितियों के रहते, सामने के परिदृश्य के लगभग स्थिरवत होते हुए भी आज कुछ दूसरी तरह की कहानी, कुछ दूसरी तरह का रचाव मेरे मन में कौंधेंगा। मेरी अन्तश्चेतना मेरे भीतर के रसायन को किन्ही दूसरे निष्कर्षों के बीच गढ़ना चाहेगी। यानी अदेखे अजाने एक मानस-यात्रा उस बीच चलती रही है जो न केवल

मेरी आँख की सीध में जड़े परिदृश्य और उससे अद्भुत सत्य के भ्रम को खंडित करती रही है परंतु नये अनुभव ज्ञान के संदर्भ और परिप्रेक्ष्य में उसे पुनः स्थापित भी करती रही है, यह बात अलग है कि इस होने को जानना इस नोकीले क्षण पर हो रहा है।

जानना यह भी हुआ कि जीवन की सम्भावनायें अनंत हैं- अपरिमित! वह अपने को बहुत-से चेहरों में खोल लेती है, बहुत- से अर्थों से पुकार लेती है, जब तक कि कोई गूँगा, बहरा, आत्मरत अनास्थावान न हो गया हो।

यह भी- कि कुछ भी नहीं है अंतिम अविकल्प! सच है प्रति-पल परिवर्तित नए अर्थ-बंधों में खुलती-खिलती मानव चेतना। स्थितियों के घर्षण से प्रतिक्षण ढहती, बनती, विकसती मनुष्य की सत्य के प्रति खुली चौकस चौकन्नी दृष्टि। रचनाकार का सत्य है- यत्न। उसकी ऋणमुक्ति है- प्रयास, यथासम्भव, यथाश्रम, यथासंवेदन दूसरों के देय को अपने भीतर से ख़ाली कर देने का प्रयास। उसका कुछ निजी है, कुछ अपना, तो उस प्रयास के प्रति उसकी अपनी एकांत निष्ठा। अंततः वह ही तो रहेगा इस स्वतः सम्भव विकास-प्रक्रिया का गवाह। इस सारे क्रम का कुछ अधिक संवेदनशील साथी। कर्म से, स्व -धर्म से, निष्ठा से, दाय से इस विराट चैतन्य को भीतर से देखने के लिए आबद्ध, समर्पित।

कुछेक कहानियाँ मैंने नहीं चरित्रों ने स्वयं कही है। उन्होंने अपने आप को खुद मुझे दे दिया है उस सीमा तक कि भाषा में चित्रित हो सकने का लेखकीय

अधिकार उन्हें दे डालने के मोह ने मुझे समूचे का समूचा जकड़ लिया है। यह भी लगा उनकी अपनी एक मनस-काया है, जो अपने अनूठे अकेलेपन को स्वयं प्रमाणित कर सकती है, अतएव शिल्प के, सामान्यता या विश्वसनीयता के दुराग्रह में मैंने उन्हें छूने का यत्न नहीं किया है। ऐसा करना अच्छा चित्र बनाने की हड़बड़ी में असली चित्र को छू देने जैसा लगा है।

अक्षम्य लगेगा 'मेरे लिए नहीं' में अंग्रेज़ी का ऐसा बहुल प्रयोग, परंतु यह प्रयोग सायास है। इस कहानी का मुख्य पात्र कॉन्वेंट की उपज है, आज के समाज का एक ढीठ सच। अंग्रेज़ी उसके बोलने की नहीं, सोचने की भाषा है, अतः मेरे लिए पात्र की मानसिकता से अविछिन्न। शुद्ध हिंदी का प्रयोग उस चेहरे का ढक देता रहा है, अतः यह बाध्यता उपस्थित हुई।

संग्रह का नाम 'तीसरी हथेली' मेरी ओर से श्रेष्ठ कहानी के इंगित किए जाने को प्रगट नहीं करता, ऐसा कोई निर्देश इस चुनाव में मेरे सम्मुख नहीं रहा, बल्कि जिस क्रम और मुद्रा में यह प्रतीक कहानी के अर्थ को खोलता और संदर्भ पाता है वही मेरे लिए आकर्षण का कारण रहा है।

अंत में भूलना नहीं चाहूँगी- किसी भी चीज़ को सौंप देने की स्थिति है- दूसरेपन का स्वीकार। उसके इंद्रिय-बोध, उसके रूप-रस-गंध के तंत्र को खुला आवाहन। दूसरे से माँगे गए उसके कान, मन, बुद्धि, संवेदना, दृष्टि। रचनाकार की अपेक्षा है बोलती हुई, अनकहा दबाव कि जो कुछ भी लिखा गया है- एक-एक

शब्द, ध्वनि, मुद्रा, भाव, तरंग उसे चौकन्ना होकर, डूबकर रिश्ता स्थापित करके पढ़ा जाए- मन को मन से, संवेदना को संवेदना से, दृष्टि को दृष्टि से ग्रहण कर लिया जाए।

ऐच्छिक या इस अनिवार्य अनकहे दबाव में अपनी संवेदना का जो हिस्सा आप मुझे देंगे उसके लिए पूरा पूर्वाभार।

राजी सेठ

शरद पूर्णिमा

23-10-1980

1/12, सर्वप्रिय विहार

नयी दिल्ली- 110016

अनुक्रम

अनावृत कौन	8
अपने दायरे	33
दूसरी ओर से	50
किसका इतिहास	79
एक बड़ी घटना	89
काया-प्रवेश	99
मेरे लिए नहीं	113
नगर-रसायन	148
तीसरी हथेली	166
योग दीक्षा	181

अनावृत कौन

बातें तो सब इसी तरह शुरू होती हैं किसी एक कण से.... दूध में पड़ी जामन की एक बूँद की तरह जो द्रव की सारी तासीर को आद्यंत बदल देती है. पेड़ों का इतना सघन आच्छादन देखकर क्या यह अनुमान हो पाता है कि इसके नीचे कहीं एक बीज-कण रहा होगा.

मैंने भी उस दिन इतना ही कहा था—एक वाक्य, मात्र एक छोटी-सी बात ...अधिक तो, अपने ही भीतर की बाधा को शब्द दिए थे. शिमला में कैबरे देखने जाते समय. कैबरे देखते समय मुझे जैसा लगता है, उसे बताने की कोशिश की थी.

कहना मैंने नहीं चाहा था तब भी, इसीलिये प्रकाश से इतनी बहस की थी. बहस इसलिए नहीं की थी कि मन में कटुता थी बल्कि इसलिए की कि मैं जानती थी कि प्रकाश इसे सहज नहीं लेगा.

प्रकाश सदा चीजों को ऐसे ही क्यों लेता है, यह मेरी समझ में नहीं आता. क्यों सुख को छीन-झपटकर वह अपने अकेले के हवाले कर लेना चाहता है. बांटने का सुख शायद वह नहीं जानता. सब-कुछ हड़प लेना चाहता है. हर चीज को तोड़-मोड़कर अपने सुख-साधन में बदल देना चाहता है. परन्तु ऐसा होता है क्या?...हो पाता है?